By:- Sucita Kumari
Dept. of History
J.N.C Madhubani

सल्तनत काल में भक्ति आन्दोलन पर निबंध

(Write an essay on the Bhakti Movement during the Sultanate Period.)

तुर्क अफगान के समय भारत के धार्मिक जीवन की प्रमुख विशेषता भक्ति आन्दोलन का उदय था। इस काल में अनेक संतो एवं सूफियों का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने धर्म को आडम्बरहीन करने एवं ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति जगाने का कार्य किया। इस युग के संतो ने जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य किये, वे थे हिंदुओ और मुसलमानों के मध्य समन्वय एवं एकता स्थापित करने का प्रयास एवं सामाजिक और धार्मिक तनाव को कम करने की चेष्टा, अपने प्रयासों में वे सफल भी रहे।

भक्ति आन्दोलन का विकास दो चरणों में हुआ। पहला चरण 7वी 13वीं शताब्दि तक चला, जब दक्षिण भारत में इसका आरम्भ हुआ, दूसरा चरण 13वी से 16वीं शताब्दि के मध्य विकसित हुआ। इस आन्दोलन का संबंध मुख्य रूप से हिंदु धर्म के साथ था। उत्तरी भारत में यह आन्दोलन अपने दूसरे चरण में इस्लाम के सम्पर्क में आया और इसकी चुनौतियों को स्वीकार करता हुआ इससे प्रभावित हुआ।"

भक्ति आन्दोलन का स्वरूप :—

— : भक्ति आन्दोलन तीव्र गति से प्रसार हुआ। सता उत्तरी भारत में भक्ति आन्दोलन तीव्र गति के आधारभूत तत्वों के बीच के एक नये वर्ग ने एक और भक्ति के आधारभूत तत्वों के बीच सामंजस्य तथा सद्भाव स्थापित किया और दूसरी ओर भारतीय रहस्यवादी धाराओं और सूफी साधनाओं की रहस्यवादी धाराओं के बीच सामंजस्य की स्थापना की। फलस्वरूप शीघ्र ही भक्ति आन्दोलन के रूप में परिणित हो गया। इन संतों ने किसी नये धर्म की स्थापना नहीं बल्कि प्रचलित धार्मिक एवं सामाजिक

कुरीतियों को दूर किया एवं हिन्दू समाज के सभी वर्गों में समानता और सद्‌भावना स्थापित की। वे धार्मिक ग्रंथों, कर्मकांडों, यज्ञ पूजा, व्रत तप आदि में विश्वास नहीं रखते थे, बल्कि एकेश्वरवाद के समर्थक थे। वे यह मानते थे कि मनुष्य जिस प्रकार अपने आत्मीय जनों से प्रेम करता है, उसी प्रकार का प्रेम वह ईश्वर से भी कर सकता है, जिसके अनेक रूप हैं। भक्ति की चरमसीमा मे उसका ईश्वर प्रेम उसी प्रकार का हो जाता है जिस प्रकार प्रेमी और प्रेमिका का। दोनों के मध्य अन्य किसी की गुंजायश नहीं रहती है। भक्ति मार्ग मे गुरु का अधिक महत्व था। गुरु भक्ति मार्ग दिखलानेवाला होता है। भक्ति संतों ने दोहे, कविताओं एवं गीतों के माध्यम से अपना संदेश जनसाधारण तक पहुँचाया। भक्ति आन्दोलन का प्रारंभ ७वीं शताब्दि मे दक्षिण भारत मे हुआ। 13वीं शताब्दि से उत्तरी भारत भी इस आन्दोलन का प्रमुख केन्द्र बन गया। इस समय तक जैन और बौद्ध-धर्म की अवनति हो चुकी थी। ब्राह्मण धर्म मे शैव और वैष्णव सम्प्रदाय ही प्रमुख बन गये थे, परन्तु इनमें भी आडम्बर और अन्धविश्वास का समावेश हो चुका था। इसी समय 13वीं शताब्दि में उत्तरी भारत में इस्लाम धर्म का प्रचार हुआ। इस्लाम धर्म की सरलता से प्रभावित होकर ब्राह्मण धर्म को भी सरल और ग्राह्य बनाने का प्रयास किया गया। प्राचीन काल में धार्मिक आडम्बरों से क्षुब्ध होकर लोगों ने ज्ञान-मार्ग, कर्म-मार्ग का सहारा लिया था जिससे जनता अत्यन्त प्रभावित हुई थी। आठवीं शताब्दि से कुमारिलभट्ट एवं शंकराचार्य ने पुनः ज्ञान मार्ग को मोक्ष-प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ मार्ग बताया। शंकर ने अद्वैतवाद का सिद्धांत प्रतिपादित किया परन्तु सामान्य जन इस मार्ग को स्वीकार नहीं कर सके। मोक्ष प्राप्ति के सही और सरल मार्ग उन्हें

भक्ति मार्ग आन्दोलन की उत्पत्ति के कारण :-

*1. भक्ति मार्ग की सरलता :- प्रो. युसुफ हुसैन के अनुसार, "ब्राह्मणवाद मूल रूप से एक बौद्धिक सिद्धांत बनकर रह गया था। वह हृदय के आधिकारी को उपेक्षा करता था। मौलिक सिद्धांत जिनकी वह बाद' शिक्षा देती थी, अवैयक्तिक एवं काल्पनिक थे। वे उन लोगों की समझ में नहीं आते थे जो सदैव एक नैतिकतायुक्त सिद्धांत एवं धर्म की खोज में थे तथा जिसके द्वारा हृदय की संतुष्टि तथा नैतिक पोषण संभव न हो।" दूसरे शब्दों में, हिन्दू-धर्म का स्वरूप अत्यन्त जटिल हो गया था। मानसिक कर्मकांडों एवं पूजा-पाठ क्रियाओं को साधारण जनता सरलता से नहीं निभा सकती थी। अतः भक्ति मार्ग जो अत्यंत सरल तथा जटिलता से रहित था लोकप्रिय होता चला गया।

*2. मुस्लिम आक्रमणकारी :- मध्यकाल में मुसलमान आक्रमणकारियों ने हिन्दू के मंदिरों और मूर्तियों को विनाश कर दिया था।

*3. जटिल वर्ण-व्यवस्था :- धीरे-धीरे वर्णव्यवस्था जाति व्यवस्था के रूप में परिवर्तित हो गयी, लेकिन मध्यकाल तक आते-आते जाति व्यवस्था बहुत जटिल हो चुकी थी। ऊँच्च जातियाँ स्वयं को श्रेष्ठ समझ कर निम्नजातियों पर अत्याचार करती थी। अतः भक्ति मार्ग ने अछूतों तथा निम्न वर्ग के व्यक्तियों के लिए भी मार्ग खोल दिया।

*4. पराधीनता के परिणामस्वरूप क्रियात्मक शक्ति के नियोजन की आवश्यकता - मनुष्य एक कर्मयोगी प्राणी है। व्यक्ति अपनी शक्ति को किसी न किसी उपयोगी कार्य में लगाना चाहता है।

भक्ति आन्दोलन के प्रमुख नेता :- भक्ति आन्दोलन को सफल बनाने में दक्षिण और उत्तरी भारत के अनेक संतों ने योगदान दिया। इसका आरम्भ 11-12वीं शताब्दी में वैष्णवों ने किया। इन लोगों ने भक्तिवाद को सैद्धांतिक स्वरूप प्रदान ... रामानुजाचार्य, विष्णुस्वामी, निम्बार्क, वल्लभाचार्य, रामानंद